"विशेष चेतावनी"

"जो कोई भी" हमारे नाम के साथ गुरु-संत-ईश्वर इत्यादि शब्दों को जोड़ करके प्रचार कर रहे हैं तथा करेंगे । अथवा तस्वीर की पूजा या ध्यान करेंगे ऐसे लोभी विषयी और विषयीयों का बोल अथवा चुप रह कर के प्रचार में योगदान करने वाले सभी प्रकार के "महानुभवों" का कभी भी किसी भी काल में हमारे से न तो "संग" ही हो पायेगा और न ही कभी कल्याण ही होना सम्भव हो सकेगा निश्चित रूप से । इन सभी के लिये इस मुल्क

के दरवाजे सदा के वास्ते बन्द ही रहेंगे, फिर परलोक के खुलेंगे इसकी तो कल्पना भी सम्भव ही नहीं हैं । अर्थात इन सभी प्रकार के महान-2 (चतुर) आत्माओं के लोक तथा परलोक दोनों सदा अभाव में ही वरतेंगे ! "केवल ऐसा ही दुर्लभ वरदान सिद्ध होगा निश्चित रूप से ।" यह दुर्लभ वरदान श्री गोबिंद सिंह जी नाम की आत्मा के द्वारा पहले से ही बख्शा हुआ है "जो हम को परमेश्वर उचरै है - ते सभ नरक कुण्ड महि परिअ है ।" निश्चित रूप से ऐसा ही साबित होगा प्रत्येक काल में । ये महंत (दलाल) कितने नीचे गिर सकते हैं इसकी तो कोई कल्पना भी सम्भव ही नहीं है। या तो इन की जी हजूरी (गुलामी) करते रहो, इन्हें प्रसन्न रखने के लिये केवल इनके स्वार्थों की पूर्ति में अपनी हस्ती मिटाते रहो (देवताओं को कभी भी ईष्ट ही नहीं है कि उनका उपभोक्ता "पशु" (मानव) उन से ऊपर के लोकों में रहे) वर्ना इस वचन को सार्थक बनाने के लिये ये ऐसे न जाने कितने संकल्पों को सिद्ध (पूर्ण) करने के लिये मिली ताकतों (सिद्धियों) का नाजायज निरन्तर दुरुपयोग करते रहते हैं जैसे या तो गुलामी करते रहो अथवा "अन्दर के रास्ते" को अवरुद्ध करने के लिये सभी प्रकार के विघ्न रूपी संकल्प किये जाते हैं । केवल इसी रास्ते के लिये ही मनुष्य जन्म का "अर्थ" है यदि वह भी इन "लोभी

खूनी भेड़ियों" की भेंट चढ़ गया तो एक तामसी योनी और मानव योनी में फिर फर्क ही क्या रह जायेगा ? अतः हर हाल में इन दलालों से पूर्णतया परहेज रखते हुऐ केवल एक "अकाल पुरख परमात्मा" का निरन्तर शुद्ध हृदय से (मिलने का) शौंक ही आत्मिक कल्याण का निश्चित साधन मात्र है ।